साथी

चमत्कारी पेड़

एक दिन जंगल में एक किसान को एक बूढ़ा आदमी मिला। दोनों बातें करने लगे। बूढ़े आदमी ने किसान से कहा, "इस जंगल में एक चमत्कारी पेड़ है।"

"अच्छा? क्या वह बीमारी का इलाज करता है?"

"ऐसा ही समझो, पैसों को दुगना करता है। अपना पैसा एक थैली में डालो और फिर थैली को पेड़ के नीचे रख दो। बस, सौ तक गिनती गिनो और लो – पैसा दुगना।"

"मैं आज़मा सकता हूँ क्या?" किसान ने पूछा।

"क्यों नहीं। पर हाँ, कुछ पैसा देना पड़ेगा।"

"किसको और कितना?"

"उसे, जो तुम्हें पेड़ दिखाएगा। और वह आदमी मैं ही हूँ।" बूढ़े आदमी ने कहा।

फिर दोनों सौदेबाज़ी में लग गए। जब बूढ़े को पता चला कि किसान के पास थोड़ा-सा ही पैसा है, तो वह किसान की इस बात से सहमत हो गया कि हर बार दुगना करने के लिए वह 1 रुपया 20 पैसा देगा।

फिर वे दोनों जंगल के बीचों-बीच चले गए। बहुत देर तक झूठ-मूठ यहाँ-वहाँ देखने के बाद बूढ़ा आदमी किसान को एक पेड़ के पास ले आया। उसके आस-पास खूब झाड़ियाँ थीं। उसने किसान की पैसे की थैली दूर से ही पेड़ के पास पटक दी। फिर दोनों ध्यान से सौ तक गिनने लगे। बूढ़े आदमी ने खूब ढूँढा-ढाँढी के बाद थैली को खोजा और किसान के पास ले आया। किसान ने थैली खोली तो – लो, पैसा दुगना हो गया था। उसने 1 रुपया 20 पैसे गिने और बूढ़े आदमी को देते हुए कहा कि सारी कार्यवाही फिर दोहराओ। फिर से वह सौ तक गिनने लगे। और पहले की तरह बड़ी मेहनत से बूढ़े आदमी ने थैली खोजकर लौटाई। चमत्कार फिर हुआ। समझौते के आधार पर बूढ़े आदमी को फिर 1 रुपया 20 पैसे मिले।

किसान लालची हो गया। उसने तीसरी बार फिर थैली फिकवाई और पैसा दुगना हो गया। पर इस बार 1 रुपया 20 पैसे गिनने के बाद यह क्या? थैली खाली। बेचारे किसान ने सारा पैसा खो दिया। दुगना करने के लिए अब कोई पैसा नहीं बचा था उसके पास।

चमत्कार का कारण तो तुम समझ ही गए होगे? सौ तक गिनना और खूब ढूँढा-ढाँढी करना एक तरीका था। बूढ़ा अपने साथी को इस बात का समय देता कि वह थैली में पैसा दुगना कर दे।

अब प्रश्न यह है कि पहली बार किसान की थैली में कुल कितना पैसा था?

चित्र: जितेन्द्र ठाकुर

2. तुम्हारी एक दोस्त को कागज़ के खिलौने बनाने हैं। उसने एक पुरानी किताब से कुछ पन्ने फाड़ लिए हैं। इन पन्नों पर 4, 5, 24, 47 व 48 नम्बर अंकित हैं। क्या तुम बता सकते हो कि उसने कुल कितने पन्ने फाड़े हैं?

3. एक आदमी सुनार के पास चेन लेकर आया। वह चेन 5 जगह से टूटी हुई थी। पाँचों टुकड़े बराबर थे और हर एक में तीन-तीन कड़ियाँ थीं। सुनार सारा हिसाब-किताब लगाकर कहता है कि उसे चार जोड़ लगाने पड़ेंगे। क्या तुम चार से कम जोड़ों में ही चेन को ठीक कर सकते हो? चक मक